

**पाचक वि.** (तत्.) 1. जो किसी कच्ची वस्तु को पचाने या पकाने वाला पुं. (तत्.) रसोई बनाने वाला रसोइया, बावर्ची, सूपकार आयु. पाँच प्रकार के पित्तों में से एक जिसका स्थान पक्वाशय और अमाशय है 3. अपाचक पित्त में रहने वाली अग्नि जो शरीर की गर्मी को भी नियंत्रित करती है 4. वह नमकीन क्षारप्रक्रिया औषधि जो भोजन को पचाने और भूख व पाचन शक्ति को बढ़ाने के लिए खाई जाती है।

**पाचन पुं.** (तत्.) 1. पचाने या पकाने की क्रिया 2. खाए हुए आहार का पेट में जाकर शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्तन अर्थात् अन्न का शरीर के पोषण करने वाले रूप में आना 3. वह औषध जो भोजन को पचाए **वि.** (तत्.) 1. पचाने वाला, हाजिम 2. किसी विशेष वस्तु के कारण होने वाले अजीर्ण को नष्ट करने वाली (औषधि)।

**पाचनक पुं.** (तत्.) 1. सोहागा 2. पाचन करने वाला एक पेय।

**पाचनगण पुं.** (तत्.) पाचन-औषधियों का वर्ग जैसे- काली मिर्च, अजवायन, सोंठ, गजपीपल, कांगड़ा सिंगी आदि।

**पाचना स.क्रि.** (तद्.) 1. पकाना 2. अच्छी तरह पकाना या परिपक्व करना।

**पाचनिका स्त्री.** (तत्.) पकाने या पचाने की क्रिया।

**पाचनी स्त्री.** (तत्.) हरड़, हर, (हरीतकी)।

**पाचनीय वि.** (तत्.) जो पकाई या पचाई जा सके; पचाने-पकाने के योग्य, पाच्य।

**पाचयिता वि.** (तत्.) 1. पकाने या पाक करने वाला, रसोइया 2. पचाने वाला, हाजिम।

**पाचल वि.** (तत्.) 1. पाक करने वाला, पकाने वाला 2. पचाने वाला, हाजिम पुं. (तत्.) 1. अग्नि 2. पाचक, रसोइया 3. राँधने या पकाने की वस्तु।

**पाची स्त्री.** (तत्.) एक प्रकार की लता जो वैद्यक में कटु-तिक्रिया, कषाय, उष्ण, वात-विकार, प्रेत-भूत की बाधा, चर्म रोग, फोड़े-फुंसी में उपकारक

मानी गई है, 'पाची लता' मरकतपत्री, हरित पत्रिका।

**पाच्य वि.** (तत्.) जो पकाया अथवा पचाया जा सके, पकाने, पचाने योग्य, पाचनीय।

**पाछ स्त्री.** (देश.) वह चीरा जो गोंद के रूप में अफीम निकालने के लिए पोस्ते के डोडे पर पतली छुरी से लगाया जाता है 2. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिए लगाया हुआ चीरा 3. पाछने की क्रिया या भाव 4. पीछे का भाग।

**पाछना स.क्रि.** (देश.) छुरी की हल्की धार से पौधे पर किया गया ऐसा प्रहार कि उसके ऊपर के भाग का रस निकल आए।

**पाजामा पुं.** (फा.) पैरों में पहनने का एक सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से ऊपर के कमर तक का भाग ढका हुआ रहता है, सुथना।

**पाजी पुं.** (तद्.) पदगति 1. पैदल सेना का सिपाही, प्यादा 2. रक्षक, चौकीदार **वि.** (तद्.) धूर्त, दुष्ट, खोटी, लुच्चा, कमीना, अधम, बदमाश।

**पाजीपन पुं.** (देश.) पाजी होने का भाव, दुष्टता, बदमाशी, खुटाई, कमीनापन, नीचता।

**पाजेब स्त्री.** (फा.) पैरों में पहना जाने वाला स्त्रियों का चाँदी का गहना जिसमें घुँघरू लगे रहते हैं, मंजीर, नूपुर।

**पाटंबर पुं.** (तत्.) रेशमी वस्त्र या कपड़ा।

**पाट पुं.** (तत्.) 1. रेशम 2. बटा हुआ रेशम 3. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा 4. पटसन या पाटसन के रेशे 5. सिंहासन, गद्दी 6. चौड़ाई, फैलाव जैसे नदी या धोती का पाट (फैलाव) 7. पीढ़ा, तख्ता 8. कोई शिला या पटिया 9. पटका जिस पर धोबी कपड़े धोता है 10. चक्की का एक ओर का भाग।

**पाटक वि.** (तत्.) विभाग करने वाला, अलग भागों में विभक्त करने वाला।

**पाटकरण पुं.** (तत्.) शुद्ध जाति के रोगों का एक भेद।

**पाटण पुं.** (तद्.) नगर, पत्तन।